में इस प्रकार के कार्यों की युनरावृत्ति न हो सके।

(v) NEED TO STOP ILLEGAL ENTRY INTO INDIA OF FOREIGN NATIONALS, SPECIALLY THOSE FROM BANGLADESH,

श्रीमत कृष्णा साही (बेगुलसराय) : उपाध्यक्ष महोदय, हर साल तकरीवन 50 हजार बंगलादेशी घुसपैठियों को हमारे देश की सीमा सुरक्षा बल के जवान बंगलादेश धकेलते हैं। फिर भी सीमा पार कर औसतन 35 से 40 हजार बंगलादेशी प्रतिवर्ष अपनी सीमा पार कर भारत में घुसते हैं और भारत में सदा के लिए बसते जा रहे हैं। इस प्रकार प्रति वर्ष लाखों बंगलादेश के लोग भारत में बढ़ते जा रहे हैं। अवैध ढंग से लोगों की बाढ़ के कारण देश की जनसंख्या में असाधारण बढ़ौत्तरी होती जा रही है जिसके कारण देश की अर्थ-व्यवस्था और कानून व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता जा रहा है। तस्करी का व्यापार भी उनके कारणों से बढ़ता जा रहा है। बिहार बंगाल के अलावा राजस्थान एवं अन्य प्रान्तों पर भी ये आबादी के बोझ के अलावा कानून व्यवस्था के लिए भी समस्या बन गए हैं। इस ओर मैं सरकार का ध्यान आकृष्ट करती हूं कि इस अवैध ढ़ंग से बढ़ती आबादी की रोक-थाम की ओर कड़े कदम उठाए, नहीं तो देश को खतरा उत्पन्न होगा।

(vi) NEED FOR SENDING SUFFICIENT QUANTITY OF WHEAT AND RICE TO JAMMU AND KASHMIR.

PROF. SAIFUDDIN SOZ (Baramulla): The Jammu and Kashmir State has suffered acute shortage of food recently due to the fact that the Centre did not fulfil the requirements of the State even on 1971 census. The Centre supplied 7000 tonnes of wheat and 12,000 tonne of rice per month against 17,000 tonnes-of rice and 9,000 tonnes of wheat required permonth on the basis or 1971 census. Not only has food been in short supply, the stocks that were sent to the State were of very inferior quality. There has to be a change in this policy, and the Centre must contribute its share in the supply of food to the State on the basis of 1981 census.

(vii) NEED FOR FINANCIAL ASSISTANCE BY CENTRAL GOVERNMENT TO INDIRA GANDHI HEART DISEASE INSTITUTE, PATNA.

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : उपाध्यक्ष महोदय, इन्दिरा गांधी हृदय रोग संस्थान, पटना बिहार एवं अन्य राज्यों की जनता की सेवा 1971 से करता आ रहा है। यहां बिहार के अतिरिक्त अन्य राज्यों के हृदय रोगियों का इलाज होता है। मैं अपना सौभाग्य मानता हूं कि इस अस्पताल के डाक्टरों और स्टाफ के लोगों की तत्परता एवं उचित इलाज के फलस्वरूप ही आज आपके सामने मौजूद हूं। मैं यहां 8 से 19 अक्तूबर तक भर्ती था।

संस्थान का कलेवर और इसकी उपयोगिता 1980 से और अधिक बढ़ गई है तथा हृदय रोगियों की सेवा करने में यह और सक्षम बन गया है। इस संस्थान में योग्य, निष्ठावन, लगनशील और बराबर चौकस रहने वाले डाक्टरों एवं स्टाफों की टोलियां, हृदय रोग की पकड़ एवं चिकित्सा के लिए आधुनिकतम मशीनें मौजूद हैं। यहां पेसमेकर लेबोरेट्री है, पारध्वनि के माध्यम से हृदय की बनावट एवं कार्य का सही ज्ञान उपलब्ध करने की मशीन हैं और इस संस्थान का नन-इनभेजिव लैब पूर्वी भारत में एकमात्र सर्वोत्तम लेबोरेट्री है।

इस संस्थान में उपर्युक्त सुविधाओं के अतिरिक्त कुछ कमियां भी हैं। यहां कोई निदेशक मैडिकल अधिकारी या अधीक्षक नहीं है, इस संस्थान में आउटडोर पेशेन्ट्स की देखभाल एवं जांच के लिए जगह की कमी